उदयपुर शहर के अन्य महत्वपूर्ण जलाशय

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	217
2.	पुरोहितों का तालाब	217
3.	अम्बेरी बड़ा तालाब एवं लखावली तालाब	218
4.	बेदला का बंधा, बेदला तलाई, चिकलवास तलाई, बेदला दूध तलाई	219
5.	डागलियों की मगरी, महुड़ा वाली पाल तालाब, अमरचन्दिया तालाब, रूप सागर	220
6.	जोगी तालाब, फूटा तालाब	221
7.	नेला तालाब, फान्दा तालाब	222
8.	तीतरड़ी तालाब, रूण्डेला तालाब, वनेला (ढींकली) तालाब	223
9.	रामेश्वरिया तालाब, सेगरा धूली तालाब एवं अन्य तालाब	224

पहाड़ियों से घिरा हुआ शहरवासियों का पसन्दीदा पुरोहितों का तालाब

पुरोहितों का तालाब - प्रकृति की सुरम्य छटा के मध्य विकसित भव्य पाल

अविकसित स्थल

प्रस्तावना : उदयपुर शहर की परिधि में कई छोटे तालाब विद्यमान हैं। राजस्व रिकॉर्ड के आधार पर इनकी पेरीफेरी पर रैलिंग लगाकर इन्हें भी उदयपुर शहर की मुख्य झीलों की भांति वाकल सब–बेसिन के पानी से भरा जाना चाहिये। इन तालाबों के भरने से भूजल का अच्छा पुनर्भरण हो सकेगा एवं शहर की अलग–अलग कॉलोनियों में रहने वाले नागरिकों के लिए भ्रमण हेतु ये तालाब रमणीक स्थल भी बन सकेंगे।

एक अध्ययन के आधार पर शहर एवं आसपास के अनेक तालाबों के अस्तित्व पर भारी संकट खड़ा है। कई तालाब मिट चुके हैं तो कुछ खत्म होने के कगार पर पहुँच गये हैं। इनको बचाने के बजाय कुछ लोग नियमों को धत्ता बता कर कुछ की छाती को पाटकर बिल्डिंगें खड़ी कर विकास की सड़के खींच रहे हैं। बढ़ती आबादी के लिए पानी की जरूरत सबसे ज्यादा होगी, लेकिन हम पानी के स्रोत यानी तालाब को ही खत्म कर देंगे तो भावी पीढ़ी बूँद–बूँद को तरसेगी। कॉलोनियों में खोदे जा रहे नलकूपों में शुद्ध और कम लवणयुक्त पानी नियमित रूप से कैसे मिलेगा? विरासत में मिले सभी छोटे तालाबों को भी संरक्षित एवं सुरक्षित रखना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। इन्हें पानी से भरने के साथ समुचित साफ–सफाई की व्यवस्था की जानी चाहिये।

पूर्व में भूजल स्तर को बनाये रखने एवं इसमें वृद्धि के लिए प्रत्येक गांव में एक से अधिक छोटे तालाब बनाये जाते थे। इनका सदैव बहु–उद्देशीय स्वरूप रहा है जिनमें नहाने, कपड़े धोने, जानवरों के पीने के अतिरिक्त गांव के कुंओं के जल स्तर में नियमित वृद्धि शामिल है। उदयपुर शहर में आवासीय आवश्यकताओं की वृद्धि से अनेक छोटे तालाब या तो पाट दिये गये हैं या उनके आकार को सीमित कर दिया गया है। इन तालाबों के लुप्त हो जाने के कारण वर्षाजल नालियों, नालें एवं नदी के माध्यम से सीधे बह जाने से भूजल स्तर में निरन्तर गिरावट आती जा रही है। आज आवश्यकता है कि इस क्षेत्र के छोटे तालाबों एवं एनिकटों का समुचित संरक्षण हो ताकि जल स्वावलम्बन में आशातीत सहयोग मिले।

छोटे तालाबों को संरक्षित कर फतहसागर झील की तर्ज पर चारों तरफ रैलिंग लगायी जानी चाहिये। इससे ये सदैव अतिक्रमण मुक्त रहेंगे। इन सभी तालाबों के पूर्ण भरे हुए होने पर भूजल का पुनर्भरण होगा, हरियाली में वृद्धि के साथ पर्यावरण भी शुद्ध होगा तथा विश्व मानचित्र पटल पर उदयपुर सुन्दर से अति सुन्दरतम् शहर के रूप में अंकित होगा। पानी के कितने ही नाम हैं जो इस युक्ति से चरितार्थ होते है :–

''यदि पानी आकाश से गिरे तो – बारिश,
यदि आकाश की ओर उठे तो – भाप,
यदि जमकर गिरे तो – ओले,
यदि गिरकर जमे तो – बर्फ,
यदि शरीर से निकले तो – पसीना,
यदि आँख से निकले तो – आँसू,
यदि सीमाओं में रहे तो – जीवन,
यदि सीमा तोड़ दे तो – प्रलय,
यदि फूल से निकले तो – इत्र
यदि फूल पर हो तो – ओस,
यदि बहने लगे तो – नदी,
यदि प्रभु के मस्तक को छूकर
निकले तो – अमृत
यदि उदयपुर की झीलों में यह नीर भरा रहे तो,
सुन्दर से सुन्दरतम् होगा।।

पुरोहितों का तालाब : यह तालाब अम्बेरी में गिर्वा घाटी के उत्तरी छोर पर 24°40´08.2" उत्तरी अक्षांश एवं 73°44´52.4" पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह चारों ओर पहाड़ियों से घिरी मनमोहक संगमरमर की पाल युक्त एक छोटी झील है जिसे मेवाड़ के पुरोहितजी द्वारा अकाल राहत कार्य के तहत बनवाया गया था। यह शहर के निकट स्थित होने से शहरवासियों एवं पर्यटकों का भ्रमण हेतु पसंदीदा स्थल है, विशेषकर वर्षा ऋतु में। विशेष तथ्य यह है कि यह पाल जयसमन्द एवं राजसमन्द की तरह देवपत्थर संगमरमर से निर्मित एवं अद्वित्तीय है। इसके पास में निर्मित आवास में इस पत्थर का उपयोग नहीं किया गया है। इसके स्थान पर दीवारों में पत्थर, चूने–गारे और सीढ़ियों, बालकनियों तथा छज्जों में ग्रे सिस्ट का प्रयोग किया गया है क्योंकि उस समय संगमरमर का उपयोग मन्दिर अथवा बाँध के निर्माण में ही होता था। निवास स्थान हेतु प्रायः इसका उपयोग मान्य नहीं था। तेंदुओं एवं अन्य जंगली जानवरों के पानी पीने का यह तालाब सुरक्षित एवं पसन्दीदा स्थल है। यहाँ निर्मित आवास एवं मन्दिर से लगी हुई ऊँची पहाड़ी पर नगरवासियों एवं पर्यटकों के लिए शहर, चीरवा घाट का पश्चिमी दृश्य एवं सुरंग की प्राकृतिक छटा देखने एवं फोटोग्राफी के लिए उच्च स्तरीय रेस्टोरेन्ट, पार्क आदि विकसित किये जाने चाहिये। इसके अतिरिक्त तालाब के चारों ओर स्थित पहाड़ियों पर वन विभाग द्वारा पर्याप्त संख्या में नियमित पौधारोपण करवाया जाना चाहिये जिससे यह स्थान उच्च स्तरीय दर्शनीय पर्यटन स्थल बन सकेगा। इस तालाब की पाल एवं उद्यान का रख–रखाव नियमित रूप से होना चाहिये। हाल ही में विकसित किये गये स्थल पर पत्थरों की जड़ाई का कार्य सुव्यवस्थित होने के साथ पत्थर भी समरूप होते तो अधिक उपयुक्त रहता।

पाल पर निर्मित मन्दिर एवं पृष्ठभाग में चीरवा घाट, फूलों की घाटी एवं जैव विविधता पार्क

संगमरमर पत्थर से जयसमन्द व राजसमन्द की तर्ज पर निर्मित पाल

अम्बेरी बड़ा तालाब : यह तालाब अम्बेरी के पास स्थित है। देबारी–पिंडवाड़ा राजमार्ग निर्माण के चलते अम्बेरी बड़ा तालाब का केचमेन्ट करीब–करीब खत्म हो गया है। कभी अपनी ऊँची मजबूत पाल वाले इस तालाब में पानी हिलोरें लेता था लेकिन आज यह रिक्त होकर इसके पेटे में केवल खेती होती है। करीब 20 बीघा क्षेत्रफल में यह तालाब और इसका बेकवाटर फैला हुआ रहता है। अम्बेरी और मेहरों का गुड़ा क्षेत्र की पहाड़ियों से वर्षा का पानी इस तालाब में पहुंचता था जो हाईवे बनने के बाद अवरुद्ध होने के साथ काला मगरा भी काट दिया गया, जिससे वहां से आने वाला पानी भी रुक गया है। कुछ वर्षों से पानी बहुत कम आ रहा है। इससे आसपास के क्षेत्र में भूजल स्तर घटा है। मिट्टी की ऊँची पाल से देखने पर इसका फैलाव तो खूब परिलक्षित होता है किन्तु इसका जल आवक मार्ग संकड़ा हो जाने के कारण कम पानी आने से अब इसके बहाव क्षेत्र में मकान बनने शुरू हो गए हैं।

अम्बेरी तालाब का विस्तारित स्वरूप

तालाब की मजबूत पाल

लखावली तालाब : यह तालाब 24°40´00" उत्तरी अक्षांश एवं 73°41´00" पूर्वी देशान्तर पर उदयपुर से करीब 10 कि.मी. दूर लखावली गांव में देबारी राष्ट्रीय राजमार्ग–76 पर स्थित है। बेड़च बेसिन की आयड़ नदी के एक बड़े नाले पर 1968–69 में पक्की पाल के साथ निर्मित इस तालाब की भराव क्षमता करीब 19 फीट है। वर्तमान में इस तालाब का अस्तित्व खतरे में है। इसके ओवरफ्लो होने के बाद पानी करीब 5 कि.मी. नाले के रास्ते होता हुआ आयड़ नदी में गिरता है, जहां मदार बड़ा व छोटा का भी पानी नदी में आता है। तीनों तरफ का पानी आयड़ नदी से उदयसागर पहुँचता है।

लखावली तालाब – विस्तारित स्वरूप के साथ मजबूत पाल

लखावली तालाब	
स्थिति	उदयपुर से उत्तरी तरफ
निकटस्थ गांव/तहसील/शहर	लखावली, तह. बड़गांव
देशान्तर	73°41'00'' पूर्वी देशान्तर
अक्षांश	24°40'00'' उत्तरी अक्षांश
मुख्य बहाव क्षेत्र	आयड़ (बेड़च बेसिन)
बाँध का प्रकार	चिनाई बाँध
सकल जलग्रहण क्षेत्र	15.54 वर्ग किलोमीटर
औसत वार्षिक जल आवक	1.53 एमसीएम
सकल जल भराव क्षमता	2.07 एमसीएम
शुद्ध जल भराव क्षमता	1.39 एमसीएम
पूर्ण जलाशय स्तर	30.48 मीटर
अधिकतम् जल स्तर	31.09 मीटर
सील लेवल	24.69 मीटर
टैंक बंध स्तर	31.39 मीटर
पूर्ण टैंक गेज	5.79 मीटर/19 फीट
अधिशेष जल निकास व्यवस्था :	
– डिजाइन अधिकतम् प्रवाह	108.57 क्यूमेक
– वीयर का प्रकार व लम्बाई	वेस्ट वियर – 3962 मी.
सकल कृषि कमाण्ड क्षेत्र	193 हेक्ट.
कृषि योग्य कमाण्ड क्षेत्र	176 हेक्ट.
गहन खेती योग्य क्षेत्र	101 हेक्ट.

स्त्रोत : जल संसाधन विभाग

लखावली से भीलों का बेदला मार्ग तक इस नाले पर जगह–जगह अतिक्रमण है। कई स्थानों पर जलप्रवाह मार्ग पर मिट्टी डालकर लोगों ने अपनी जमीन पर जाने के रास्ते बना दिए हैं। खेत व खलिहान के खातेदार अपनी चारदीवारी को आगे बढ़ाकर नाले को बीच–बीच में मिट्टी डालकर पाट दिये जाने को प्रयासरत है एवं नलकूप खोद दिये गये हैं। तालाब के पेटे में कई जगह से खुदाई करके बड़े–बड़े गड्ढ़े बना दिये गये हैं। तालाब में आड़ी–टेढ़ी खाइयाँ खोदने से तालाब कई हिस्सों में बँट गया है। अतः इस तालाब में चिह्नित स्थानों पर निश्चित गहराई तक खुदाई करने की स्वीकृति दी जानी चाहिये। पेटा काश्त खातेदार मिट्टी की खुदाई करवाने हेतु अधिकृत नहीं होने चाहिये। स्थानीय नागरिकों, होटल व्यवसायियों को विरासत में मिले इस तालाब के केचमेन्ट क्षेत्र, ओवरफ्लो के नाले में अतिक्रमण व रुकावटें खड़ी न हो, इसका पूरा ध्यान रखना होगा ताकि इस क्षेत्र का भूजल स्तर ऊँचा रहने के साथ हरियाली में वृद्धि से पर्यावरण में भी शुद्धता बनी रहेगी।

लखावली तालाब – अरावली पहाड़ियों एवं हरीतिमा के मध्य विशाल दृश्य

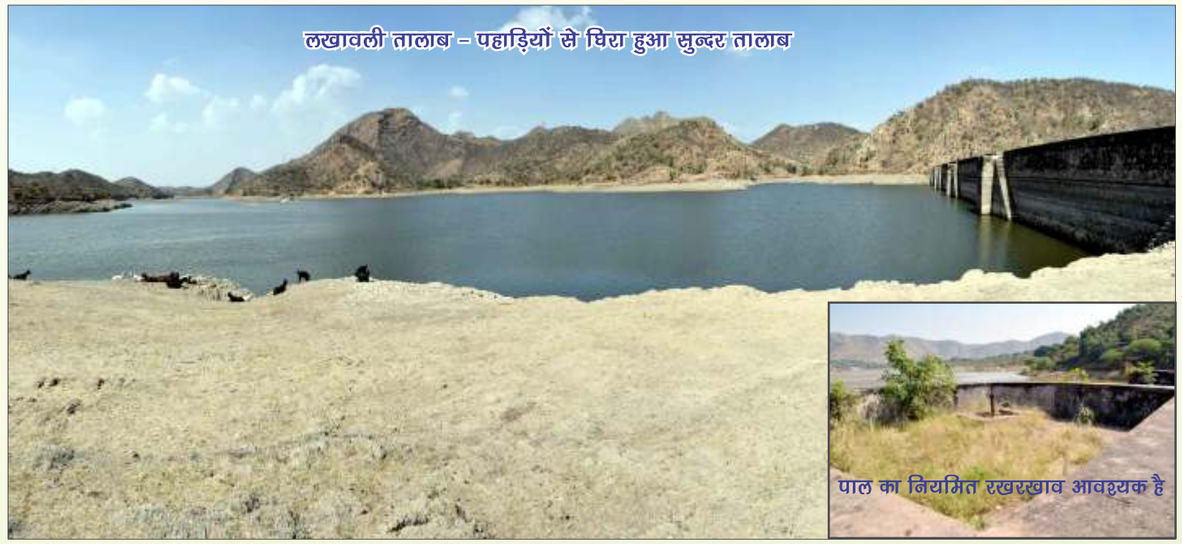

लखावली तालाब – पहाड़ियों से घिरा हुआ सुन्दर तालाब

पाल का नियमित रखरखाव आवश्यक है

बेदला का बँधा : यह करीब 60 वर्ष पूर्व आयड़ नदी के पानी को रोककर बनाया गया था। नदी को रोक कर बनाए जाने के कारण इसे बँधा कहा जाता है। इससे पानी को छोड़ने के लिए दो गेट लगाए गए थे। इनमें से एक गेट हटा लिया गया है। दूसरे गेट का उपयोग बरसों से नहीं किया गया है। इस बँधे के नजदीक ही छोटी नहर है और उस पर भी लोहे का गेट लगा है। बँधे में पानी भरा होने की स्थिति में इससे आसपास के बड़े क्षेत्र में सिंचाई के लिए पानी छोड़ा जाता था। करीब 10–12 फीट भराव क्षमता वाले इस बँधे में अब मात्र 5 से 6 फीट पानी ही भर पाता है। इसके पेटे में बहकर आई मिट्टी से इसकी भराव क्षमता सीमित हो गई है। पूर्व में अप्रेल–मई तक भरा रहने वाला यह बँधा अब दिसम्बर तक ही सूख जाता है। बँधा भरा रहने पर आसपास के कुएँ–बावड़ियों का जलस्तर अच्छा बना रहता था। इसके समुचित संरक्षण एवं भराव क्षमता में वृद्धि करने के लिए स्थानीय पंचायत एवं नागरिकों के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

बेदला बंधा – पूर्ण भराव उपरान्त छलकते हुए

बेदला बंधा – रिक्त अवस्था में – सीमित गहराई

बेदला बंधा – अधिकतम् जल भराव स्तर पर

बेदला तलाई : यह तालाब 24°38′18.6" उत्तरी अक्षांश एवं 73°41′43.1" पूर्वी देशान्तर पर गांव के आबादी क्षेत्र के मध्य गांव से सुखदेवी माताजी मार्ग पर ग्राम पंचायत के संस्कृति उद्यान के पास स्थित है। वर्षा ऋतु में प्रायः भरी रहने वाली यह तलाई दिसम्बर–जनवरी माह आते–आते सूख जाती है। इसकी भराव क्षमता में वृद्धि के साथ इसे अतिक्रमण मुक्त रखना आवश्यक है।

बेदला तलाई – चारों ओर से आवासीय बस्तियों से घिरी हुई

चिकलवास तलाई : यह तलाई चिकलवास के पास 24°39′04.8" उत्तरी अक्षांश एवं 73°39′53.8" पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह महाराणा फतहसिंहजी के शासनकाल में आयड़ नदी पर बँधा बनाकर पानी को रोककर बनाई गई थी। इस बँधे के माध्यम से वर्षाकाल में मदार छोटा एवं बड़ा के छलकने के बाद बहते पानी एवं इन तालाबों में संचित पानी को चिकलवास नहर के द्वारा दिशा परिवर्तन कर फतहसागर को भरा जाता है। इस तलाई के बाँध को पक्का कर पानी छोड़ने के लिए बँधे एवं नहर पर गेट लगाये गये। यह तलाई भी अतिक्रमण से ग्रसित है। इस तलाई के नियमित भरने से थूर, चिकलवास, लोयरा एवं आसपास के गाँवों के कुओं के पुनर्भरण से भूजल स्तर अच्छा रहता है। यह उदयपुर शहर का सब्जी एवं खाद्यान्न उत्पादन का मुख्य उपजाऊ क्षेत्र है। इस तलाई को गहरा कर भराव क्षमता में वृद्धि करनी चाहिये।

चिकलवास तलाई – आयड़ नदी पर बना बंधा

आयड़ नदी

चिकलवास तलाई

तलाई से जल दिशा परिवर्तन

चिकलवास फीडर

बेदला दूध तलाई : छोटा बेदला एवं वर्तमान सुखदेवी नगर तथा शिकारबाड़ी पहाड़ियों की तलहटी में स्थित यह तलाई काफी विशाल है। इसकी ऊँची मजबूत पाल एवं जल आवक क्षेत्र को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि पूर्व में इस तलाई का पानी प्रत्येक वर्ष हिलोरें लेता था। वर्तमान में दिसम्बर आते–आते यह सूख जाती है तथा इसके पेटे में खेती होती है। इसके आसपास आवासीय बसावट एवं ओद्यौगिक इकाइयों के विस्तार से तलाई में पानी की आवक सीमित हो गई है। इस तलाई को पुनर्जीवित करने हेतु इसके जलग्रहण क्षेत्र में पानी आने के मार्गों से सभी अवरोधों को हटाना अत्यन्त आवश्यक है।

बेदला दूध तलाई – पूर्ण रिक्त अवस्था में – मजबूत पाल

डागलियों की मगरी : यह तालाब भुवाणा गौरव पथ के किनारे महावीर कॉलोनी के पास 24°36′37" उत्तरी अक्षांश एवं 73°42′11" पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। उदयपुर मास्टर प्लान में संरक्षित यह तालाब 3.27 हेक्टयर (20 बीघा) क्षेत्रफल में फैला हुआ है। इसकी भराव क्षमता 8 फीट है। यह वर्ष 2006 में लबालब होने के बाद छलका तथा लम्बे इंतजार के बाद वर्ष 2019 में पुनः छलका। तालाब के पेटे में आज भी खेती की जा रही है। तालाब पेटे से सटी भूमि एवं सड़क के किनारे भराव डालकर कुछ क्षेत्र पर अतिक्रमण किया गया है। इस तालाब में सुखेर व सापेटिया क्षेत्र से बरसाती पानी बहकर पहुँचता था। इसके केचमेन्ट क्षेत्र में मकान एवं सड़के बनने से इस तालाब में पानी अब कम पहुँच रहा है। इस तालाब को बचाने के लिए राजस्व रिकॉर्ड के आधार पर सीमांकन करते हुए प्राकृतिक बहाव क्षेत्र को खुर्द–बुर्द होने से बचाया जाना चाहिये। यह तालाब भुवाणा क्षेत्र में विकसित अनेक कॉलोनियों में रहने वाले लोगों के लिए वरदान साबित होगा। इसे भ्रमण एवं पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने में स्थानीय नागरिकों को नगर विकास प्रन्यास का सहयोग करना चाहिये। यह भू–जल का मुख्य स्रोत है। इसे पाटने पर आसपास के नलकूप सूख जायेंगे।

पूर्ण भराव स्तर तालाब का विस्तृत स्वरूप

महुड़ा वाली पाल तालाब : यह तालाब भुवाणा क्षेत्र में स्थित है। महुड़ा (महुआ) का वृक्ष इसकी पाल पर होने के कारण इसका नाम महुड़ा वाली पाल तालाब पड़ा। पूर्व में धाबाईजी का तालाब और डागलियों की मगरी से ओवरफ्लो होने वाला पानी इस तालाब में आता था। आज यह तालाब एक छोटे से गड्ढे में तब्दील हो चुका है तथा ऊँचाई क्षेत्र में बस चुकी बस्ती का गन्दा पानी आकर इसमें समाहित होता है। केचमेन्ट का पानी इसमें नहीं पहुंचे, इसके लिए इसके केचमेन्ट मार्ग को जगह–जगह बाधित कर दिया गया है। तालाब के भराव क्षेत्र को पाटकर सड़क बना दी गई है। वर्तमान में तालाब की पाल से सटा गमेती समाज का श्मशान है, जिससे इसकी आधी पाल बची हुई है। पाल के दक्षिण दिशा से पानी ओवरफ्लो होकर अमरचंदिया तालाब में समाहित होता है। इस तालाब को संरक्षित करना आवश्यक है। स्थानीय क्षेत्रवासी ही इसे बचा सकते हैं। इससे इस क्षेत्र के पर्यावरण एवं जलस्तर में सुधार संभव होगा।

अमरचंदिया तालाब : भुवाणा क्षेत्र में सेलीब्रेशन मॉल के पीछे 15 बीघा क्षेत्र में फैले हुए बरसों पुराने इस तालाब का अस्तित्व खो चुका है। इस पर सड़के और मकान बना दिये गये हैं। कई जगह बरसाती पानी के मार्ग में अवरोध पैदा कर देने से अब इस तालाब में पानी नहीं भरता है। अमरचंदिया तालाब में रत्नागिरी की पहाड़ी एवं भुवाणा मगरा से बरसाती पानी पहुंचता था। इसके अलावा महुड़ा तालाब का पानी भी आता था। वर्ष 1973 और 1983 की वर्षा के दौरान इतना पानी आया कि तालाब क्षेत्र में बने कुछ मकानों में पानी चला गया था। प्रशासन ने तालाब की पक्की पाल को तुड़वाकर पानी खाली कराया तथा बाद में इसे दुरुस्त भी नहीं करवाया गया। वर्तमान में तालाब ढूँढने पर ही मिलता है तथा इस तालाब का स्वरूप ही खत्म हो गया है।

रूप सागर : उदयपुर के पूर्वी छोर न्यू केशव नगर के पास 27.6 हेक्टयर क्षेत्र में फैला हुआ यह विशाल तालाब अतिक्रमण से ग्रस्त है। इस तालाब की पाल वाले छोर को छोड़कर बाकी तीनों तरफ तालाब की जमीन का अतिक्रमण हो चुका है। रूप सागर का विशाल रूप तभी दिखेगा, जब यह पानी से भरा रहेगा। चित्रकूट नगर की पहाड़ियों के केचमेंट से होकर पानी तालाब तक पहुँचता है। तालाब तक पानी पहुँचाने वाले कच्चे नाले अतिक्रमण के शिकार हो गये हैं। तालाब की राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार सीमा तय की जावे, सड़क बनाकर इस पर अतिक्रमण रुके एवं इसकी जल भण्डारण क्षमता बढ़ाने के लिए इसे गहरा किया जाये। गन्दे नाले को सिवरेज लाइन से जोड़ा जाये। इसके अतिरिक्त तालाब के केचमेन्ट से आने वाले नालों को चिह्नित कर वर्षाकाल में इसमें खोले जाये जिससे यह तालाब पूरा भरकर अपने विशाल रूप से स्थानीय लोगों को दिखे एवं वे इसे संरक्षित एवं सुरक्षित करने में प्रशासन को सहयोग करें। स्थानीय लोग यह समझे कि यह तालाब आवासीय कॉलोनियों में खुदे नलकूपों के भूजल स्तर को सुधारने एवं पर्यावरण शुद्धीकरण के लिए अति आवश्यक है। रूप सागर के सौन्दर्यीकरण का कार्य नगर विकास प्रन्यास द्वारा तालाब की पाल का पुनर्निर्माण कर अच्छी सड़क पाल किनारे बनाई गई तथा रैलिंग लगाकर उसके सहारे–सहारे पौधारोपण किया गया। पूरी सड़क पर स्ट्रीट लाइट से रोशनी भी की गई। इससे स्थानीय नागरिक संतुष्ट हैं, लेकिन कार्यों की गुणवत्ता पर थोड़ा और ध्यान दिया जाता तो अधिक उचित होता।

रूपसागर की एक समान गहराई से खुदाई करवाकर इसकी भराव क्षमता में वृद्धि की जा सकती है।

नगर विकास प्रन्यास, जिला प्रशासन, सिंचाई विभाग एवं पंचायती राज विभाग के संयुक्त प्रयासों से इस तालाब को अतिक्रमण मुक्त करते हुए इसके मूल स्वरूप को लौटाकर फतहसागर जैसा स्वरूप दिये जाने के प्रयास किये जाने चाहिये। नगर विकास प्रन्यास के सौन्दर्यीकरण के बाद इस तालाब की पाल पर स्थानीय नागरिकों के सुबह और शाम के भ्रमण के साथ इसे एक मनोरंजन स्थल के रूप में विकसित कर पेड़ल नाव चलाई जा सकती है। इस तालाब को बचाने में स्थानीय नागरिकों के प्रयास भी काफी सराहनीय हैं।

रूपसागर के समुचित रख-रखाव से इसकी सुन्दरता में और निखार आ सकता है।

रूपसागर - पूर्ण भराव स्तर पर जल का विस्तारित स्वरूप - गन्दे पानी के समावेश से जलीय घास एवं काई का फैलाव

जोगी तालाब : नगर विकास प्रन्यास के दक्षिण विस्तार योजना में आने वाले जोगी तालाब, सवीना खेड़ा के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। इस तालाब को फतहसागर की तरह पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह तालाब 24°30′27.1" उत्तरी अक्षांश एवं 73°41′49.3" पूर्वी देशान्तर पर स्थित होकर 25 बीघा क्षेत्र में फैला हुआ है। तालाब की उत्तरी परिधि में 840 फीट लम्बी और 40 फीट चौड़ी रिंग रोड बनाई गई है। रिंग रोड के सौन्दर्यीकरण के साथ पौधे लगाकर विश्राम स्थल भी बनाकर इसे एक पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित किया गया है। दक्षिण विस्तार योजना के अन्तर्गत रहने वाले लोगों के लिए जोगी तालाब ही उनका फतहसागर हो, ऐसा स्वरूप देने का प्रयास होना चाहिये। तालाब के चारों ओर रिंग रोड बनाकर बंसियाँ लगा देनी चाहिये जिससे कोई भी अतिक्रमण नहीं हो सके। यहाँ पर गुणवत्तायुक्त खाद्य पदार्थ, पेडेट बोट एवं नाव संचालन के साथ तालाब एवं पाल के रखरखाव की समुचित व्यवस्था नगर विकास प्रन्यास द्वारा सुनिश्चित की जानी चाहिये। इस विशाल तालाब में पक्षियों के लिए प्राकृतिक अथवा कृत्रिम टापू भी विकसित किये जाने चाहिये।

सघन हरियाली युक्त पहाड़ियों के मध्य जोगी तालाब का मनोहारी स्वरूप

फूटा तालाब : यह तालाब 24°33′01.7" उत्तरी अक्षांश एवं 73°41′39.6" पूर्वी देशान्तर पर हिरण मगरी, सेक्टर–13 में स्थित है। जानकारों के अनुसार करीब 60 बीघा क्षेत्र में फैले इस तालाब में बरसाती पानी आता था। इसकी गहराई 10–15 फीट है। पानी सूखने पर लोगों ने तालाब में बरसों तक काश्तकारी भी की। पाल मिट्टी की होने एवं समय पर मरम्मत नहीं होने से वर्तमान में इसमें पानी अधिक समय तक नहीं टिकता है। यह तालाब गोवर्द्धन विलास एवं सविना खेड़ा के बीच आता है। इसमें तालाब की पाल एवं कुछ आराजी सविना में तो कुछ भराव क्षेत्र गोवर्द्धन विलास में शामिल है। यह तालाब अतिक्रमण ग्रसित है। वर्ष 2006 में अतिवृष्टि से यह फुल टेंक लेवल तक भर गया एवं नावें तक चली। इस तालाब की पाल को सुदृढ़ कर इसका आधुनिक रूप से विकास करना चाहिये जिससे सेक्टर 13 के पर्यावरण में सुधार के साथ भूजल स्तर में सुधार एवं क्षेत्र की सुन्दरता में भी अभिवृद्धि होगी। गोवर्द्धन सागर के छलकने के उपरान्त बहकर आने वाला पानी इस तालाब को भरने का मुख्य स्रोत है।

फूटा तालाब – कंटीली झाड़ियों से आच्छादित

जोगी तालाब पर भ्रमण हेतु सुव्यवस्थित बंसियों के साथ पाथ-वे

जोगी तालाब पर बेंच टेरेस

विशाल जोगी तालाब का मनोहारी प्राकृतिक स्वरूप

फूटा तालाब

नेला तालाब : यह तालाब उदयपुर के नेला गांव एवं वर्तमान में सेक्टर–14, हिरण मगरी में 24°32′16.4" उत्तरी अक्षांश एवं 73°41′50.2" पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। गोवर्द्धन सागर एवं आसपास के क्षेत्र सेक्टर–14 से बहकर आने वाला पानी इस तालाब को भरने का मुख्य स्रोत है। इसके अतिरिक्त दक्षिणी–पूर्वी ऊपरी क्षेत्र भी इसका जलग्रहण क्षेत्र है। इस तालाब की 231 मीटर लम्बी पाल को तालाब किनारे वाले छोर की चिनाई कर ऊँची पक्की दीवार बनाने के साथ उसी तरफ फतहसागर के विभूति पार्क की तर्ज पर ड्राई–स्टोन पिचिंग की गई है। पाल पर पाथ–वे बनाकर बैंचे लगाई गई हैं जिस पर बैठकर पानी पर उठती हुई लहरों एवं शांत जल सतह का आनन्द लिया जा सकता है। पाल के साथ सड़क बनाकर व्यवस्थित पार्किंग सुविधा भी विकसित की गयी है। पूर्वी–दक्षिणी छोर पर स्थित फेलोशिप स्कूल से पाल तक आरसीसी की बंसियाँ लगाई गई हैं। इसे प्रातः एवं सायंकालीन भ्रमण हेतु चारों तरफ रिंग रोड बनाकर अतिक्रमण मुक्त किया जाना चाहिये। गर्मियों में श्रमदान से कचरा, प्लास्टिक बोतलें आदि को तालाब के पेटे से बाहर निकालने के साथ जल भण्डारण क्षमता की वृद्धि के लिए इच्छुक व्यक्तियों को व्यवस्थित रूप से मिट्टी/पणा निकालने की स्वीकृति दी जानी चाहिये। पाल पर पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, डाउनस्ट्रीम में छतरियों के निर्माण के साथ पौधारोपण एवं उद्यान विकसित करने से इसकी सुन्दरता में अद्वितीय अभिवृद्धि की संभावना है तथा इससे यह क्षेत्र स्थानीय निवासियों का प्रमुख आकर्षण केन्द्र भी बन सकेगा।

नेला तालाब

नेला तालाब : काई एवं जलीय खरपतवार

नेला तालाब की भव्य पाल

फान्दा तालाब : तीतरड़ी गांव के पूर्वी छोर की कुछ दूरी पर यह तालाब 24°31′54.6" उत्तरी अक्षांश एवं 73°44′11.5" पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इसकी मिट्टी की लम्बी पाल नियमित रखरखाव के अभाव में बबूल एवं अन्य काँटेदार पौधों से आच्छादित होकर कीचड़ से अटी पड़ी है। इस तालाब के पेटे में भी खेती होती है। नगर विकास प्रन्यास के द्वारा इस तालाब की पाल को पक्का बनाकर इसे संरक्षित एवं सुरक्षित रखा जाना चाहिये। तालाब के पूर्ण भराव उपरान्त जल निकास की उच्च स्तरीय व्यवस्था के साथ नाले का बहाव क्षेत्र भी चिह्नित किया जाना चाहिये।

फान्दा तालाब

संपूर्ण फान्दा तालाब

फान्दा तालाब – पूर्ण भराव जल भराव उपरान्त ओवरफ्लो दृश्य

नेला तालाब का विहंगम दृश्य एवं भ्रमण हेतु विकसित पाल का सुन्दर स्वरूप

तीतरड़ी तालाब : यह तालाब उदयपुर के दक्षिणी दिशा में तीतरड़ी गाँव के पास 24°31′30.8" उत्तरी अक्षांश एवं 73°42′36.7" पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इसे नया तालाब के नाम से भी जाना जाता है। इस तालाब को संरक्षित एवं सुरक्षित रखना इस क्षेत्र के नागरिकों एवं नव–विकसित कॉलोनियों के लिए बहुत आवश्यक है। यह तालाब भूजल की स्थिति को अनुकूल रखने में भी बहुत सहायक सिद्ध होगा। इस तालाब के पूर्ण भराव उपरान्त छलकने पर इसका पानी फान्दा तालाब में समाहित होता है। नगर विकास प्रन्यास, उदयपुर द्वारा इस तालाब के सौन्दर्यीकरण के साथ इसे विकसित किया जाना चाहिये।

तीतरड़ी तालाब के जल फैलाव का विस्तृत स्वरूप

तीतरड़ी तालाब की सुदृढ़ पाल : इसे संरक्षित कर सुन्दर स्वरूप दिया जाना चाहिये।

रूण्डेड़ा तालाब : यह तालाब गोकुल विलेज एवं गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल के पास 24°33′10.6" उत्तरी अक्षांश एवं 73°43′35.2" पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। अहमदाबाद हाईवे से जुड़ा रूण्डेला तालाब तीतरड़ी, मनवाखेड़ा आदि गांवों के आस–पास में रहने वाले लोगों की प्यास बुझाता है। इसी प्रकार इस क्षेत्र के कुएँ और ट्यूबवेल के जल स्तर को सुधारने में भी इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका हैं। तालाब के जल स्तर में कमी होने के साथ गेहूँ व सब्जियों की खेती की जाती हैं। वर्तमान में यह तालाब अतिक्रमणग्रस्त है। इसे संरक्षित एवं सुरक्षित रखना इस क्षेत्र के निवासियों के लिए पर्यावरण की शुद्धता, जल उपलब्धि एवं क्षेत्र की सुन्दरता की दृष्टि से अति आवश्यक है। यह तालाब करीब 30 बीघा क्षेत्र में फैला हुआ है एवं इसकी गहराई करीब 10 फीट है। वर्ष 2006 एवं 2019 में अतिवृष्टि होने पर पूर्ण भराव की स्थिति में इस तालाब की विशालता दृष्टिगत हुई थी। इसका समुचित पुनरोत्थान कर इसे एक सुन्दर स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

रूण्डेडा तालाब : इसे विकसित कर जल भण्डारण क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

तालाब में पसरी झाड़ियों एवं कचरे को निस्तारित कर इसे एक सुन्दर प्राकृतिक तालाब के रूप में विकसित किया जा सकता है।

वनेला (ढींकली) तालाब : नगर विकास प्रन्यास, उदयपुर क्षेत्र के गांव ढींकली स्थित बनेला तालाब 24°40′8.2" उत्तरी अक्षांश एवं 73°44′52.4" पूर्वी देशान्तर के पर करीब 65 बीघा क्षेत्र में फैला हुआ है एवं इसकी भराव क्षमता 10 फीट है। यह तालाब करीब 900 वर्ष पुराना है। इसका निर्माण तत्कालीन राजा चतुर्भुज की बहन वन्ना बाई ने कराया था, इस कारण इसका नामकरण वनेला तालाब हो गया। तालाब के साथ ही चारभुजाजी मन्दिर का भी निर्माण हुआ। नगर विकास प्रन्यास ने वर्ष 2013 में इसका सीमांकन कराया और इसके चारों ओर मुटाम बना दिए लेकिन तालाब का अभी तक सौन्दर्यीकरण नहीं हुआ है। इस पर 30 फीट चौड़ी मिट्टी की दीवार पानी को रोकने के लिए बनी हुई है। इस कच्ची दीवार से जल रिसाव के कारण तालाब जल्दी खाली हो जाता है। पिण्डवाड़ा–देबारी हाईवे–76 के निर्माण के दौरान जल प्रवाह मार्ग अवरुद्ध होने से पिछले कई वर्षों से यह तालाब पूर्ण रूप से नहीं भर रहा है। तालाब सूखने के साथ ही इस क्षेत्र का भूजल स्तर भी नीचे चला गया है। बारिया माताजी पहाड़ियों से सरपट बहकर आने वाला बरसाती पानी इस तालाब में समाहित होता रहा, लेकिन वर्ष 2005 में हाईवे निर्माण के दौरान प्राकृतिक बड़े नाले के प्रवाह मार्ग को संकरा कर दिया गया और 500–700 फीट की दूरी पर दो अलग–अलग संकरे प्रवाह मार्ग बना दिये गये जिससे तालाब में पानी की आवक कम हो गई। वर्तमान तालाब के केचमेन्ट की पहाड़ियों से पानी बड़ी मात्रा में बहकर व्यर्थ ही चला जा रहा है। इसमें एक मार्ग का पानी तालाब में डायवर्ट कर दिया गया है जबकि दूसरे प्रवाह मार्ग को खेतों में छोड दिया गया है। यह पानी व्यर्थ ही बहकर कॉलोनियों में से होता हुआ बेड़वास की तरफ निकल जाता है।

इस विशाल तालाब की जल भण्डारण क्षमता को बढ़ाकर इस क्षेत्र के भूजल स्तर में सुधार किया जा सकता है।

रामेश्वरिया तालाब : इस तालाब को मनवा खेड़ा तालाब के नाम से भी जाना जाता है। करीब 5 बीघा से अधिक क्षेत्र में फैला यह तालाब वर्ष 2006 एवं 2019 में पूर्ण रूप से लबालब हुआ था। यह दो केचमेन्ट एवं बहाव क्षेत्र हिरण मगरी–एकलिंगपुरा एवं एकलिंगपुरा–बलीचा बाईपास पर स्थित है। इस तालाब के डूब क्षेत्र की खातेदारी कृषि भूमि में खेती होती है। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल के दक्षिण की तरफ तीतरड़ी मार्ग पर स्थित रूण्डेला तालाब से ओवरफ्लो होने के बाद पानी खेतों में होकर रेलवे ब्रिज के नीचे से इसमें पहुँचता है। हाईवे और इसके आसपास की पहाड़ियों का पानी भी इसमें आता है लेकिन रूण्डेला तालाब के पश्चिम की तरफ आवासीय प्लानिंग हो जाने से इनके नाले के बहाव मार्ग अवरुद्ध हो गये हैं, जिसके फलस्वरूप यह तालाब प्रायः रिक्त अवस्था में ही रहता है। इससे इस क्षेत्र के भूजल स्तर में भी गिरावट आयेगी एवं पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इसके पुनरोत्थान हेतु स्थानीय प्रशासन को सकारात्मक कदम उठाने चाहिये। स्थानीय नागरिक भी जागरूकता के साथ इसके विकास में सहयोगी बन सकते हैं।

सेगरा धूणी तालाब : रकमपुरा के समीप पहाड़ियों की गोद में स्थित सेगरा धूणी तालाब करीब 100 वर्ष पुराना है। 12 फीट की भराव क्षमता वाला यह तालाब 13 बीघा क्षेत्रफल में फैला हुआ है। इस तालाब में अतिक्रमण की तो समस्या नहीं है लेकिन रिसाव होने से इसमें पानी टिकता नहीं है और जल्दी खाली हो जाता है। नगर विकास प्रन्यास द्वारा पक्की दीवार निर्माण एवं ग्राउन्टिंग कार्य करवाया गया लेकिन पानी का रिसाव नहीं रुक पाया है। इस तालाब की भराव क्षमता को बढ़ाने के लिए इसे गहरा किया जाये ताकि तालाब में वर्षभर पानी भरा रह सके। इससे भूजल स्तर भी बढ़ जायेगा। तालाब का ओवरफ्लो नाला बहुत छोटा कर दिया गया है जिसे बड़ा किया जाना चाहिये। इससे पानी की अधिक आवक होने पर अतिरिक्त पानी को निकलने में आसानी रहेगी। तालाब का सीमांकन होना चाहिए और इसके चारों ओर रिंग रोड बनाने के साथ खूबसूरती में वृद्धि के प्रयास होने चाहिये। तालाब के आसपास कॉलोनियों विकसित हो चुकी हैं। अतिक्रमण रोकने के लिए अत्यधिक सावधानी आवश्यक है। ग्रामीणों के अनुसार इस तालाब का निर्माण लगभग 100 वर्ष पूर्व सेगरा धूणी के महन्त रेवापुरी महाराज ने ऊँटों को बेचकर करवाया था। उनको ये ऊँट मालवा व मारवाड़ के भक्तों ने भेंट किए थे। महन्तजी ने करीब 80 से अधिक ऊँट बेचे थे। इसमें ग्रामीणों ने भी आर्थिक सहयोग किया था। उनका धूणी पर ही आश्रय स्थल था।

अन्य तालाब : इसके अतिरिक्त मण्डोप तालाब स्वामी नगर (भुवाणा) के पास 24°36′32.9" उत्तरी अक्षांश एवं 73°42′44.0" पूर्वी देशान्तर, **मनोहरपुरा तालाब** बड़गांव के पास 24°37′38.7" उत्तरी अक्षांश एवं 73°40′43.7" पूर्वी देशान्तर, **ढींकली द्वितीय तालाब** ढींकली में 24°40′8.2" उत्तरी अक्षांश एवं 73°44′52.4" पूर्वी देशान्तर, **झरणों की सराय तालाब** 24°35′42.8" उत्तरी अक्षांश एवं 73°47′24.9" पूर्वी देशान्तर, **पालड़ी तलाई** 24°39′33.2" उत्तरी अक्षांश एवं 73°39′41.4" पूर्वी देशान्तर तथा **पालड़ी बड़लावाला तालाब** 24°38′33.2" उत्तरी अक्षांश एवं 73°39′41.4" पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इसी प्रकार **धाबाईजी का तालाब** एवं **सौभागपुरा तलाई** एवं बलीचा पंचायत में **फुटयान तालाब** भी उदयपुर शहर के परिसर में स्थित है। इन्हें भी राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार चिह्नित कर सुरक्षित किये जाने चाहिये। शहर की सुन्दरता एवं पर्यावरण संरक्षण में इनका भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा।